प्रगतिशील लेखक संघ

काव्य रत्न
प्रतिनिधि रचनाएं ....













डॉ. मुहम्मद नईम

शाहिद अजनबी
पारसमणि अग्रवाल

नई क़लम पब्लिशिंग हॉउस

काव्य रत्न

प्रतिनिधि रचनाएं ……..

डॉ. मुहम्मद नईम

शाहिद अजनबी

पारसमणि अग्रवाल





प्रकाशक :

नई क़लम पब्लिशिंग हाउस

69/156, दाना खोरी स्टेशन रोड, कानपुर - **208001**

मो-. 84179795, 9044510836

कला – निर्देशन : शिखा वर्मा

पहला संस्करण: 2016

मूल्य : 1 $ | 50 ₹

Kavya Ratn – Pratinidhi Rachnayen … Edited by Dr. Naeem, Shahid Ajnabi , Parasmani Agrawal

Connect to Editor

mohdnayim00@gmail.com , *shahid.ajnabi@gmail.com*, *parasmaniagrawala@gmail.com*

Facebook:- *https://www.facebook.com/naikalampub/*

Published By

Nai Kalam Publishing House

69/156, Danakhori Station Road, Kanpur-208001

Mob : 8417979575, 9415925223, 9044510836 , 8005271243

Email: *info@naikalam.com*

Website- *www.naikalam.com*

First Edition: 2016

Price: Rs. 50 | $1

सम्पादक मण्डल

डॉ. मुहम्मद नईम 'बॉबी'



शाहिद अजनबी



पारसमणि अग्रवाल



क्रमवार

सम्पादक - डॉ. मुहम्मद नईम की डेस्क से -

प्रलेस कोंच इकाई के सचिव की तरफ से जब मुझे इस संकलन का विचार सुझाया गया तो नए लेखकों को ध्यान में रख कर बड़ा अच्छा लगा, कोशिशें शुरू की तो उम्मीद से ज्यादा समर्थन मिलने लगा. अप्रत्याशित रचनाएँ भी आईं. युवा सम्पादक पारसमणि अग्रवाल और नई क़लम पब्लिशिंग हाउस के मुख्य सम्पादक शाहिद अजनबी के विशेष योगदान से इस संकलन को हम आपकी आँखों के सामने ला सके.

इन दोनों छोटे भाईयों की बड़ी मेहनत से हम इतने सारे लेखकों को एक साथ ला पाए. हम अपने इस प्रयास में कितना सफल हुए ये तो अब आप सुधि पाठक ही बताएँगे .

कम लिखा ज्यादा समझिएगा . आपके शब्दों की प्रतीक्षा रहेगी ..

डॉ. मुहम्मद नईम

सम्पादक - शाहिद अजनबी की डेस्क से -

प्रकाशन की अपनी जिम्मेदारियां होती हैं. अगर आप आर्थिक पहलू देखें तो नि:संदेह ये बहुत बड़ी चर्चा का विषय है. लेकिन अगर कोई प्रकाशन आर्थिक क्षेत्र के लिए सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वाह ठीक से न करे तो मेरे हिसाब से ऐसा प्रकाशन समाज के लिए कोई मायने नहीं रखता है. जब प्रलेस की कोंच इकाई की तरफ से मेरे पास ये प्रस्ताव रखा गया तो हमने भी नई क़लम पब्लिशिंग हाउस की टीम के साथ चर्चा की तो सर्वसम्मति से प्रकाशन के माध्यम से सामाजिक योगदान को तैयार हुई बल्कि ख़ुशी-ख़ुशी इस 'काव्य रत्न' के लिए प्रमोशन करने लगे.

कुछ एक हफ़्तों में ही हमारे पास ढेर सारी रचनाएं आ गयीं. कुछ लेखकों ने कहा इस योजना की अंतिम तिथि भी बढ़ा दी जाए ताकि ज्यादा लोग अपनी रचनाएं भेज सकें.

इस कैम्पेन में हमारे साथ 200 से ऊपर लेखक जुड़े . हमारे पास 400 से ऊपर रचनाएं आयीं. सम्पादन में बहुत वक़्त लगा.

हमारी टीम के लिए इतनी बड़ी किताब तैयार करना मुश्किल काम था. आप को पढने में भी अरुचि हो सकती थी. इसलिए हमने चुने हुए लेखकों को एल्फाबेटीकली ऑर्डर से पहले 20 लेखक की 40 रचनाएं आपकी आँखों के सामने हैं.

आप पाठकों को बताते चलें , इस संकलन में जिन रचनाकारों को शामिल कर रहे हैं. उनके नाम निम्न लिखित हैं.

आचार्य संजीव वर्मा 'सलिल' ,आनन्द बाला शर्मा ,आबिद मिस्बाही,अजय देवगिरी , अजय कुमार पाण्डेय, आकाँक्षा जादौन ,अमितकुमार बिजनौरी ,अनंत महेन्द्र ,अनीता गुप्ता ,अनिल शुक्ल ,अनुपम चितकारा ,आरिफ शहडोली ,अरविन्द श्रीवास्तव ,असद निज़ामी, अशोक दर्द ,बसंत कुमार शर्मा ,छगन लाल गर्ग ,दीप शिखा झा ,धर्मा नन्द लखेड़ा ,दिनेश बैस ,दीपक गांधी,दीपक मशाल ,दीपक राजा ,डॉ. दिवाकर पोखरियाल ,डॉ ज्योति मिश्रा ,डॉ मकीन कोंचवी ,डॉ. मनोहर अभय ,डॉ श्रीमती नीना छिब्बर ,डॉ प्रिया सूफ़ी ,डॉ आर बी भण्डारकर ,डा० रेखा जैन ,डॉ.शिखा कौशिक 'नूतन' ,जी के गौरव,गीता दुवे ,गुलशन गणेश कुमार ,ज्ञानेन्द्र मोहन ज्ञान ,हरीश

,हर्षद बी ,हातिम जावेद ,जावेद पठान 'सागर ' ,जया नरगिस ,जीतेंद्र धीर ,जोया एहतिराम "तमन्ना" ,ज्योति साहू ,काजेन्द्र श्रीवास्तव ,कल्पना भट्ट ,कृष्णकुमार ,कुमार चंदन ,कुमार रवींद्र ,मधुर कुलश्रेष्ठ ,माण्डवी वाहने ,मनहरण ,मनीष गोस्वामी ,मनीष खरे ''मृग'' ,मनीषा 'जोबन ,मेघा आचार्य ,मेघा झा ,मेघा राठी ,मेहर ज़हीन " माही " ,नाहेदा शेख ,नरेंद्र कुमार ,नीलम कुलश्रेष्ठ ,नीरज चौहान ,Nirmal parashar ,नूर आलम ,पवन कुमार शर्मा ,पायल सविता ,प्रभात ,प्रभात कुमार गुप्ता ,प्रदीप गौतम ,प्रिया धारूरकर ,पण्डित लल्लूराम कौशिक ,पूनम झा ,रचना व्यास ,रजत गुप्ता ,राजेंद्र उपाध्याय ,राजकिशोर मिश्र 'राज' प्रतापगढ़ी ,राकेश पाठक ,रामकृष्ण विनायक ,रानी श्रीवास्तव ,रश्मि किरण ,रावेल सिंह खानूजा,रोली मिश्रा ,रूबी रस्तोगी ,सालिहा मंसूरी ,समाधान इंगळे ,समीर पठान अल्फ़ाज़ ,संजय अग्निहोत्री ,सपना मांगलिक ,सौम्या मिश्रा ,सीरवी प्रकाश पंवार ,सेराज खान बातिश ,Shailendra verma ,शालिनी कौशिक ,श्रीचन्द्र वर्मा 'चन्द्र' ,श्रीकृष्ण भगवानराव खरात ,श्रीमती मिथलेश बड़गैयाँ ,सुमित कुमार सोनी ,सुनिल उबाळे ,वंदना मोदी गोयल ,विक्रम मिश्र ,विन्ध्यप्रकाश मिश्र ,योगेन्द्र प्रताप मौर्य ,जेबा अंसारी ..

आप को ये भी सुनकर अच्छा लगेगा कि आप सब लेखक मित्रों की जो रचनाएं चुनी गयी हैं उन्हें समय - समय पर हमारी ई-पत्रिका 'नई क़लम - उभरते हस्ताक्षर' में भी प्रकाशित किया जाएगा. नई क़लम के सोशल साइट्स के ऑफिशियल पेज पर भी समय - समय पर प्रकाशित किया जाएगा . तो आप जुड़े रहिए, साथ बने रहिए.

प्रलेस कोंच इकाई का जितना योगदान रहा उतना ही नई क़लम की टीम ने हमारा साथ दिया.

आपकी प्रतिक्रियाओं का इंतज़ार रहेगा .....

शाहिद अजनबी

सम्पादक - पारसमणि अग्रवाल की डेस्क से -

हृदय की आवाज.........

आधुनिक परिवेश में साहित्य पटल पर भी बाजारवाद अपनी जड़ें गहरी जमाने को भरसक प्रयासरत है। बाजारवाद ,साहित्य पर हावी होने के कारण लेखकों का शोषण चरम सीमा पर देखने को मिल रहा।

"साहित्य समाज का दर्पण है।" लेकिन पूँजीवादी के दैत्य के आक्रमण से बाजार में ऐसा साहित्य जल्दी अपनी पैठ बना लेता है जो उसके काबिल होने के कारण नही बल्कि एक आर्थिक पैकेज के बदले बाजार तक आने में सफल साबित होता है। ऐसे में वो मुकम्मल रचनाएँ आर्थिक अभाव में पाठकों से दूर रह जाती, उस मुकाम तक नही पहुँच पाती है जिसकी वह असली हकदार है।

इसे हमारे समाज की विडम्बना नही तो और क्या कहा जाये रचनाकार अपने दिमागी श्रम से रचना को सृजित करें फिर उसे जीवन प्रदान करने के लिये अर्थात पाठकों तक पहुँचाने के लिये उसे आर्थिक पैकेज प्रकाशकों,सम्पादकों को भेंट करना पड़ता तब कंही जाके रचनाकार द्वारा सृजित की गई रचना एक मुकम्मल मुकाम प्राप्त करती है। रचना की श्रेष्ठता नहीं बल्कि आर्थिक पैकेज को देखकर रचना प्रकाशित करने वाले प्रकाशक,सम्पादक की दिन-दुगनी,रात चौगनी संख्या बढ़ती जा रही है जो सम्भवतः साहित्य पटल के लिये घातक साबित हो सकती है।

इसी बाजारवाद की दुनिया से अलग

प्रगतिशील लेखक संघ (प्रलेस) इकाई -कोंच एवं प्रगतिशील लेखक संघ के साँझा संयोजन में प्रकाशित यह काव्य संग्रह विलम्ब के लिये खेद प्रकट करते हुये इस आशा और विश्वास के साथ आपके हाथों में सौप रहा हूँ कि इस संग्रह को भी आपके प्यार, स्नेह, टीका-टिप्पणियों से परिचित होने का सौभाग्य मिलेगा।

पारसमणि अग्रवाल

<u>आचार्य संजीव वर्मा 'सलिल'</u>

*



आचार्य संजीव वर्मा 'सलिल'

जन्म१९५२-८-२० :, मंडला मध्य प्रदेश.

माता - शांति देवी .स्व :पिता-स्वराज बहादुर वर्मा .

प्रेरणास्रोतबुआश्री : महीयसी महादेवी वर्मा

शिक्षात्रिवर्षीय : डिप्लोमा सिविल अभियांत्रिकी, बी.ई., एम.ई .आई ., विशारद, एमअर्थशास्त्र) .ए ., दर्शनशास्त्र(, एलएल.बी ., डिप्लोमा पत्रकारिता, डी.ए .सी .

संप्रतिपूर्व कार्यपालन यंत्री लोक : निर्माण विभाग म.प्र ., अधिवक्ता मउच्च न्यायालय .प्र ., अध्यक्ष अभियान जबलपुर, महामंत्री राष्ट्रीय कायस्थ महापरिषद, संरक्षक राजकुमारी बाई बाल निकेतन, संयोजक विश्व हिंदी परिषद।

प्रकाशित कृतियाँ(१९९७ गीत संग्रह भक्ति) कलम के देव .१ :, २. भूकंप के साथ जीना सीखें जनोपयोगी) (१९९७तकनीकी , ३(२००१कविताएँ) लोकतंत्र का मक़बरा ., ४मीत . मेरे (२००२कविताएँ), ५काल है . संक्रांति का नवगीत संग्रह, ६।(प्रबंध काव्य) कुरुक्षेत्र गाथा .

संपादन(१९८३अभियंता कवियों का संकलन) निर्माण के नूपुर :कृतियाँ (क) :, नींव के पत्थर अभ)ियंता कवियों का संकलन १९८५(, राम नाम सुखदाई १९९९ तथा २००९, तिनका२०००तिनका नीड -, सौरभः २००३,यदा२००४ कदा -, द्वार खड़े इतिहास के २००६, समयजयी साहित्यशिल्पी प्रो. भागवतप्रसाद मिश्र 'नियाज़' २००६, काव्य मंदाकिनी २००८ व २०१०।

(ख१९८३शिल्पांजलि :स्मारिकाएँ (, लेखनी १९८४, इंजीनियर्स टाइम्स १९८४, शिल्पा १९८६, लेखनी१९८९ २-, संकल्प १९९४,दिव्याशीष १९९६, शाकाहार की खोज १९९९, वास्तुदीप २००२, इंडियन जिओलॉजिकल सोसाइटी सम्मलेन २००४, दूरभाषिका लोक निर्माण विभाग २००६, निर्माण दूरभाषिका २००७, विनायक दर्शन २००७, मार्ग)IGS) २००९, भवनांजलि (२०१३), अभियंता बंधु)IEI) २०१३

(ग१९९४से १९८०चित्राशीष :पत्रिकाएँ (, एमसबॉर्डिनेट इंजीनियर्स मंथली .पी. जर्नल १९८२ १९८७ -, यांत्रिकी समय १९८६ १९९० -, इंजीनियर्स टाइम्स १९९६ १९९८ -, एफोड मंथली जर्नल १९८८ ९० -, नर्मदा साहित्यिक पत्रिका २००२ ।२००४ -

चालीस चोर

चालीस चोर अलीबाबा -
क्योेें करते बंटाढार?

जनता माँगे
दो हिसाब
क्यों की तुमने मनमानी?
घपले पकड़े गये
आ रही याद
तुम्हें अब नानी

सजा दे रहा जनगण

नाहक क्यों करते तकरार?

चालीस चोर अलीबाबा -

क्योेें करते बंटाढार?

जननायक से

रार कर रहे

गैरों के पड़ पैर

अपनों से

चप्पल उठवाते

कैसे होगी खैर?

असंसदीय आचरण

बनाते संसद को बाज़ार

चालीस चोर अलीबाबा -

क्योेें करते बंटाढार?

*

जनता समझे

कर नौटंकी

फैलाते पाखंड

देना होगा

फिर जवाब

हो कितने भी उद्दंड

सम्हल जाओ चुक जाए न धीरज

जन गण हो बेज़ार

चालीस चोर अलीब -ाबा

क्योेें करते बंटाढार?

*

नवगीत

जनता भई परायी

*

सत्ता पा घोटाले करते

तनकऊ लाज न आयी

जाँच भयी खिसियाये लल्ला

जनता भई परायी

*

अपनी टेंट न देखे कानी

औरों को दे दोस

छिपाछिपाकर ऐब जतन से-

बरसों पाले पोस

सौ चूहे खा बिल्ली हज को

चली, न क्यों पछतायी?

जाँच भयी खिसियाये लल्ला

जनता भई परायी

*

रातों रात करोड़पति -

व्ही आई पी भये जमाई

आम आदमी जैसा जीवन

जीने गैल भुलाई-

न्यायालय की गरिमा

संसद में घुस आज भुलाई

जाँच भयी खिसियाये लल्ला

जनता भई परायी

*

सहनशीलता की दुहाई दें

जो छीनें आज़ादी

अब लौं भरा न मन

जिन्ने की मनमानी बरबादी

लगा तमाचा जनता ने

दूजी सरकार बनायी

जाँच भयी खिसियाये लल्ला

जनता भई परायी

आनन्द बाला शर्मा



शिक्षा
बी.एस.सी, एम.ए, बी.एड
इन्दौर में

रुचि
साहित्य में गहन रुचि

पठन-पाठन व लेखन से लगाव
हिन्दी के प्रति समर्पित

मूल विधा
कहानी ,कविता ,लेख,संस्मरण आदि

रचनाएँ
जे एम डी पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित पुस्तकें
नारी चेतना के स्वर,एकता की मिसाल आदि
राष्ट्रीय संकलनों में रचनाएँ प्रकाशित
गूंगी प्रतिक्रिया, गूँज, पठार की खुशबू और
दिल से मे रचनाओं का प्रकाशन
देश विदेश की पत्र-पत्रिकाओं में
रचनाओं का प्रकाशन
गद्य संकलन प्रकाशाधीन

प्रसारण
इन्दौर आकाशवाणी एवं जमशेदपुर आकाशवाणी
से रचनाओं का प्रसारण

वर्तमान में
शहर की कई ख्यातिप्राप्त संस्थाओं से जुड़ाव
शिक्षण क्षेत्र में सेवा निवृत्ति के पश्चात अध्ययन
एवं साहित्य साधना में संलग्न

इच्छा
साहित्य सेवा द्वारा समाज को सही दिशा
प्रदान करना

पता
402सोनारी वेस्ट ले आऊट
रोड नं 11
जमशेदपुर-11

-महानगर

नीरव रात में

बहुत ऊँची इमारत से

बीच अधर में

ताकती चकित सी

नीचे धरती पर

बौने घरों से झांकती

बल्बों की टिमटिमाती रोशनी

ऊपर चाँद

नीचे बिखरी चाँदनी

सितारों से भरा आसमान

जैसे उल्टा लटका हुआ हो

और नीचे

बीच चौराहे पर

आते जाते वाहनों के शोर मे गुम

अकेली खड़ी मैं

आकाशदीप की तरह

गगनचुंबी इमारतों को देखती

लगा जैसे मैं

और भी बौनी हो गई हूँ।

पहचान -

क्या हूँ मैं ?

क्या है मेरा वजूद?

कोंपल पर पड़ी ओस

या सूरज की पहली किरण

सुबह की गुनगुनी धूप
या शीतल मंद बयार

चिड़ियों की चहचहाहट
या आकाश में उड़ती पतंग

रसोई से उठती सोंधी महक
या किसी गीत की अधूरी कड़ी

छेड़ी गई रागिनी
या फुरसत का कोई पल

कोई सुखद संदेश
या होसला ज़िन्दगी का

जिंदगी !
कभी धीरे से फुसफुसाकर
कह देना कान में
क्या हूँ मैं ?
क्या नाम है मेरा ?
क्या पहचान है मेरी ?

आबिद मिस्बाही



नाम आबिद मिस्बाही -

पता बरेली -

उम्र -23 बर्ष

फोन – 8941074281

जमाने में कहां मिलती बफ़ा है
मुझे मालूम है,,,,,, तू वेबफ़ा है

मुझे तुम छोड़कर जबसे गये हो
मिरी तक़दीर भी मुझसे खफ़ा है

बड़ा अहसान है मुझपर फ़िजा का
तिरा पैगाम जो ,,,,,,लायी हवा है

जिये जाता हूं चाहत में तुम्हारी
अवस यूं तो हक़ीमों की दवा है

लिपटकर मैं खुदी से ,,,रो लिया हूं

मिली जब भी मुहब्बत की सजा है

ग़मे तन्हाइ ने ,,,मारा है लेकिन
खुली आॅखों को तेरा आसरा है

मुसाफिर की तरह मिस्बा चला चल
सफ़र में हमसफ़र,,,, तेरा ख़ुदा है
आबिद मिस्बाही

चरागे दिल बुझा ,सकता नही कोई
मुहब्बत को मिटा सकता नही कोई

हजारों कोशिसे की हैं,, हराने की
दिवानों को हरा सकता नही कोई

टिकी है प्यार की मंजिल बफ़ाओं पर
दिवारों को ,,,,,हिला सकता नही कोई

नशा जिसको सिखा दे यार की आखें
नशा उसको,,,, चढा सकता नही कोई

नही आसां लिख़ा तकदीर मिट जाये
लकीरों को ,,,,मिटा सकता नही कोई

ग़मोको जिस ने अपने साथ रख्खा हो
कभी उसको,,, रुला सकता नही कोई

यकीं टूटे,,, तो रिश्ते ,,,,,,,,,टूट जाते हैं
दिलों को फिर मिला सकता नही कोई

सभी फूलों को,, माली सींच लेते हैं
गुले चाहत ख़िला सकता नही कोई

हमें आतिश से आबिद क्यूं डराते हो
जले को फिर जला सकता नही कोई

अजय देवगिरि



अजय देवगिरि का जन्म नासिक में हुआ है और इनकी प्रारंभिक शिक्षा भी वही से हुई है। जैविकीविज्ञानं में स्नातक तक की शिक्षा प्राप्त करके इन्होंने पुणे विश्वविद्यालय से MBA की शिक्षाप्राप्त की है। फिल हाल हैदराबाद में एक उच्च कंपनी में कार्यरत हैं। जीवन को समझने के दिनों सेही इनपर सूफी विचारधा रा का गहरा प्रभाव रहा है। पिछले काफी समय से यह कवितायें लिख रहेहैं और इनकी कविताऐं कस्तूरी नाम के कविता के साँझा संग्रह में प्रकाशित हो चुकी हैं ।

फिर आई है रात

फिर आई है रात

एक हसीन ख्वाब के साथ

तेरे मेरे सपनों का

आशियाना सजाने

जहाँ दर ना हो दीवारों में

दरमियाँ चाँद सितारों में

बसाएंगे एक नया जहान

हम अपनी बाहों में

फिर आई है रात

तेरी यादों के साथ

थाम के मेरा हाथ

बीते दौर में ले जाने

जहाँ कुछ पल है इकरार के

तेरे मेरे प्यार के

और कुछ है दुश्वार लम्हे

हैं तेरे इंकार कर

फिर आई है रात

तेरी यादों के साथ

मुझे हँसाने

मुझे रुलाने

तू दूर है तो दूर ही सही

तू दूर है तो

बेआरज़ू है चाहत तेरी

तेरी जुस्तजू है

पर दुआओं में तू नहीं

तू दूर है तो दूर सही

तुझे पाने की आस है

पर तू पास नहीं

तेरी कशिश में जो बेकाबू हो

सो अब वो एहसास नहीं

तू दूर है तो

दूर ही सही

तेरा चेहरा चमकता है चाँद है

पर इन फासलों ने ही तेरा रूप निखारा

के तुझमे भी कहीं दाग है

तू खूब है

पर खूब नहीं

तू दूर है तो

दूर ही सही

दिलकश दिल्लगी है

जैसे कोई बंदगी है

पर इस बंदगी में कहीं

कोई आज़ादी नहीं

तू दूर है तो

दूर ही सही

<u>अजय कुमार पाण्डेय</u>



नाम : *अजय कुमार पाण्डेय*

पिता का नाम : *स्वश्री शारदा प्रसाद पाण्डेय .*

माता का नाम : *स्वकलावती पाण्डेय श्रीमती .*

जन्म : जुलाई 11, 1959, भुआ बिछिया, जिला -मण्डला (.प्र.म)

शिक्षा : स्नातकोत्तर महा विद्यालय बालाघाट .शास : (.प्र.म)

विधा : कविता, गीत, हिन्दी ग़ज़ल, कहानीउपन्यास। .

सम्मान : बद्री नाथ चौकसे स्मृति साहित्य सम्मान .2015अनुराधा प्रकाशन की ओर से साहित्य रत्न .2015काव्य गौरव 2016, साहित्य श्री सम्मान आदि। 2016

प्रकाशन : 'बेशरम की झाड़ियां' (कविता संग्रह(, 'स्रोत से बहते शब्द' (कविता संग्रह(, 'उड़ जायेगा हंस

अकेला' (उपन्यास(, 'एक कदम शेष' (कहानी संग्रहपत्रिकाओं तथा -एवं विभिन्न पत्र (साझा संकलनों में कहानियों एवं कविताओं का प्रकाशन।

सम्प्रति : से हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड 1981, मलांजखण्ड में कार्यरत।

वर्तमान पता : बी193/1-, हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड, मलांजखण्ड, जिला (.प्र.म) बालाघाट - .481116

स्थायी पता : 320, सुन्दर नगर, कारगिल चौक, रायपुर (.ग.छ)

फोन नंबर : 09425875128

ई मेल पता- : ajaypandey117@gmail.com.

कुछ मरासिम सा ज़माना लग रहा था

फिर वही किस्सा पुराना लग रहा था।

डूब कर मैं फिर किनारे आ लगा था

आज लहरों पर ठिकाना लग रहा था।

वह चलाता जा रहा था तीर मुझ पर

ठीक दिल पर ही निशाना लग रहा था।

आज सागर शांत था वीरान भी था

ज़ख़्म उसका भी पुराना लग रहा था।

धूप में गर्मी ग़ज़ल के शे'र जैसी

और मौसम शायराना लग रहा था।

हो रही थी नूर की बारिश ज़मीं पर

हर नज़ारा आशिकाना लग रहा था।

उस के आने में कहीं अड़चन नहीं थी

बस न आने का बहाना लग रहा था।

<u>**जंग छोटी ही सही दिल से लड़ना चाहिये**</u>

काम कोई हो बड़ा मिल के करना चाहिये

जंग छोटी ही सही दिल से लड़ना चाहिये।

दूरियाँ बढ़ने लगीं जम गये रिश्ते सभी

ज़िन्दगी की बर्फ़ तो अब पिघलना चाहिये।

शह्र में चारों तरफ़ धुन्ध सी छाने लगी

रोशनी की एक किरन भी चमकना चाहिये।

देर से चारों तरफ़ एक अंधेरा है घिरा

शम्स कोई अब नया सा दमकना चाहिये।

डूबती कश्ती रही पास भी साहिल न था

टूटती उम्मीद को अब संभलना चाहिये।

खोजता फिरता रहा मैं जिसे, वह पास था

इस भरम से अब मुझे भी निकलना चाहिये।

खो गया था मैं अंधेरी गली के मोड़ पर

कुछ उजालों की किरन मुझ को मिलना चाहिये।

<u>आकाँक्षा जादौन</u>



जन्म तिथि-:15/07/1983

विषय"सोच बदलो देश बदलेगा"समाज का चिन्तन कर समाज तक पहुँचाना।-:

मैं कलम से कलम मुझसे नहीं मे तो एक तुच्छ सेवक बनके दवी हुई आवाज़ छुपे हुए पहलुओ की ... पहल बनना चाहती हूँ। अंधेरे को मिटाने के लिए एक दिया ही काफ़ी है मेरे विचारो से प्रभावित एक

दीपो की पक्ति!व्यक्ति ने भी मेरी सोच का समर्थन किया तो मेरा जीवन सार्थक हो जायेगा जुडके कब दिवाली बन जायें ये पता नहीं।मेरा उद्देश्य देश की सेवा करना है जिसमें प्रभु ने चुनाव किया है मैं तो साधारण हूँ सोच असाधारण हो सकती है पर मक़सद एक है देश के प्रति अपना कर्तव्य निभाना सब अपने अपने क्षेत्र में योगदान देते है शायद यही मेरा योगदान हो।

स्थान.. मेरी जड़े गाँव से जुडी है दिल्ली में रहती हूँ पर-:

ग्रामबछेला बछेली-:

जिलाफिरोजावाद-:

राज्यउत्तर प्रदेश-:

पिताश्री सतेन्द्र सिहं-:

माताश्री मती रुपा देवी-:

पतिअभिषेक जादौन-:

शिक्षाबी एड(भूगोल) एम ए-:

कार्यसाहित्य कविता-:,कहानी ,लेख,उपन्यास

"अश्क छुपायें है हमने"

सिमटे हुए लव्जो में ,

अश्क छुपायें है हमने!!

क्या कहूँ विरह की व्यथा,

छुप छुप के अरमान बहायें!!

मीत बीच भंवर छोड़ चली,

प्रभु की रीति समझ न पायें!!

कौन समझ सके व्यर्था ,

छुप छुप के अश्क वहायें!!

अधीर में मन धीर रखा ,

मीत के सपनो से प्रीत रखा!!

जितने पल बिताये थे साथ,

ज्वाला सा प्रेम प्रीत रखा!!

पिता का पालन हार बना,

ममता की छाँव से दूर रहे!!

बचपन की हिठलारी,

हम कैसे न समझ सके!!

विचलन न हो जायें पथ से,

कटु वचन से संयम करायें!!

कौन समझे किसको सुनायें,

व्रह की व्यर्था अश्क छुपायें!!

फूलो का बना रखवाला,

कांटो सा किरधार निभाया!!

हृदय की पीना मुख न आया,

भागिनी बिन संसार बसाया!!

देखे थे मिलके कितने सपनें,

परिवार अनमोल बनाया!!

बीच भंवर मीत छोङ चली,

मैं पतवार माझी बनाया !!

दुनिया दारी के लाख झमेले थे,

किसे सुख दुख के साक्षी बनाते!!

असमज्सय में जब जब मैं था,

मीत तुम याद बहुत आये!!

हुनर की कसोठी देकर हमने,

संसार का काविल मांझी बनाया!!

संक्षम का मूलमंत्र देकर हमने,

दम्पती का घर है बसाया !!

सब फूलो को स्थान दे दिया ,

मैं माली एकान्त रह गया !!

मन मीत याद आता बहुत,

हृदय पीणा किससे सुनायें!!

सिमटे हुऐ लव्जो में ,

अश्क छुपायें है हमनें!!

कंधे झुक गये बुढ़ापे में,

सहारा मीत लाठी ने लेली!!

फूलो के पास वक्त नहीं,

माली की पीणा सुन सकें!!

क्या कहूँ व्रह की व्यर्था ,

छुप छुप के अरमान बहायें!!

अब तो हो जायें नेत्र बंद,

मीत के संग फिर से गीत गाये!!

पल पल डगर थी कठिन,

तेरी याद ने राह दिखाई!!

मीत के बिना सब राग सूने,

फूल के संग राग बनाई!!

कौन समझे मेरी पीणा,

छुप छुप के अश्क बहायें!!

<u>"दर्पण की आँखे"</u>

दर्पण की आँखो से मिलाकर,

कितने क़िस्से फसाने निकलें!!

पत्थर दिल भी पिघले,

कैसे कैसे अरमान मचलतें!!

खुद को राधा तुझको मोहन,

या खुद को मोहन तुझको राधा!!

कितने कितने अभिनय निकलते,

दर्पण की आँखो से मिलाकर,

हर दिल की बात निकलती!!

औढनी की हिठलोरी सजाकर,

यौवन के रूप को निखारते!!

खोके सपनो में सब कैसे?

कैसे कैसे अरमान सजाते!!

प्रीत संग बरखा में भीगकर,

बंसत के संग मुस्कराते!!

लज्जाते सरमाते खुद से,

यौवन को और निखारते!!

दर्पण की आँखो से मिलाकर,

कैसे कैसे अरमान सजाते!!

सुडैल उत्कृष्ट भुजायें देखकर,

अभिनेता सा अभिनय उतारतें!!

बनाते है खुद को शहशांह,

हम हैं बाकी पानी कम कहते!!

दर्पण की आँखो से मिलाकर,

कितने क़िस्से फँसाने निकलते!!

निर्वल क्षीण शक्ति हो जिसकी,

ऊर्जा से पहचान कराते !!

गायक की आवाज़ की परख,

सुरों से है पहचान करातें!!

कवि की सुर ओर ताल,

जुगल बंदी खूब कराते!!

खोता हो जिसका विश्वास,

मित्र बन होशला खूब बढातें!!

दर्पण की आँखो से मिलाकर,

कितने क़िस्से फसाँने निकलतें!!

दर्पण हरएक का है मित्र,

सुख दुख का राज बनकें!!

व्यक्तित्व से मिलाता,

दुनिया से जो डरते!!

तुझसे हर बात है करते,

दर्पण की आँखो से मिलाकर,

कितने क़िस्से फँसाने निकलते!!

दर्पण है पारस,

उसको उसके रूप में रगता!!

दर्पण बिन सूना संसार,

दर्पण है सबका आधार!!

दर्पण की आँखो से मिलाकर,

कितने क़िस्से फँसाने निकलते!!

<u>अमितकुमार बिजनौरी</u>



अमितकुमार बिजनौरी

पता कादराबाद खुर्द

पोस्ट स्योहारा

जिला बिजनौर

उत्तर प्रदेश

पिन न0 246746

मो न0 9927763734

अमन शांति प्यार महोब्बत की एक परिभाषा नई बने

समया आ गया सम्बन्धो की एक भाषा भी नई बने।।

छोड़े ऊँच नीच के बातें

कथनी करनी एक करे

दिल से नफरत छोड़

करूणा की धार भरे

हो दिवार रहित संसार एक अभिलाषा भी नई बने ।।

समय आ गया.......

बहुत हो चुका दुनिया में

भाई अलगांवबाद

भूल कर आपसी मत भेद

बढ़ाना है प्रेमबाद

एक्त्त्व की बात कर और एक आशा भी नई बने ।।

समय आ गया.......

डॉक्टर वकील मास्टर कवि या तुम विद्वान बनो

कुछ भी बनो मुबारक है मगर पहले इन्शान बनो

समझो कहाँ कमी हैऔर एक जिज्ञाषा भी नई बने

समय आ गया.......

2. बिन देखे तुझको साजन मेरे नैना तरस गये ।

जब याद तुम्हारी आई तो मेरे नैना बरस गये ।।

तुम बिन खाली खाली मेरे जीवन का आँगन

रहता प्यासा प्यासा तुम बिन मेरा ये मन

सुनकर तुम लौट आओ मेरे दिल की फरियाद

पल पल छिन छिन तुमको मेरा दिल करे याद ।

तुम्हे याद करते करते मेरी आँख में आँसू बस गये।

जब याद तुम्हारी.......

हे प्राण नाथ तुमसे मेरी एक यही अभिलाषा

समझो मेरे मन की तुम क्या कहती है भाषा
रफ़्ता रफ़्ता आँसू मेरी आँख से छलके
तेरी चाहत में बालम भींगी भींगी मेरी पलके
मन में जागी तृष्णाये शायद तुम कहीँ फंस गये
जब याद तुम्हारी........
मेरा तुम्हारा तो एक जन्मों का बंधन
प्रेम सूत्र में बंधे हुये है कहती दिल की धड़कन
तुमने ही मुझको ये जो अधिकार दिये है
बाँहो से तुमने मुझको फूलो के हार दिये है
तुम लौटे न राह में कई वर्ष गुजर गये
जब याद तुम्हारी आई.....

"अनंतमहेन्द्र "



अनंत महेन्द्र

निवासी फुलारीटाँड -, धनबाद, (झारखण्ड(

शिक्षा.ए.एम :, बीएड.

सम्पर्क :8409685913

वृद्धाश्रम:

जो कभी तुझे उंगलियाँ पकड़कर,
सारी राह चलाता था।
तेरी छोटी बड़ी-ख्वाइशों के लिए,
पूरे माह कमाता था।
जो खुद कभी भूखा सो जाता पर,
तेरे टॉफियाँ लाता था।
तेरी एक हँसी मुस्कान देखने,
थककर भी घर वापस आता था।

तेरे बीसियों एक से प्रश्नों के,
जवाब वो हर बार देते थे।
तेरी हर जिद पूरी करने को,
सर्वस्व वार देते थे।
जिसके हर एक शब्द में,
कोई न कोई सबक होती है।
आज उनकी नेक सलाह भी,
तुम्हें बकबक लगती है।

आज जब तुम खुद बड़े हो गए,
पाँव पर अपने खड़े हो गए।
टूटी झोपड़ी अब मकान हो गया,
पैसों पे तुम्हें अभिमान हो गया।
पिता के ईलाज के पैसों को,
कहते हो नुकसान हो गया।

दो रोटी ही तो ज्यादा लगता है,

अरे वो तेरे बच्चों का दादा लगता है।
थोड़ा ही सही तुम ध्यान धरो,
उनके अनुभवों का सम्मान करो।
बस इतना ही तुम कर्म करो,
कि वृद्धाश्रम न फोन करो।।
"अनंतमहेन्द्र "

कश्मीर की झाँकी::

एक दिन मेरे कमरे में
घुस गए साँप चार।
कश्मीरी पण्डितों सा
बाहर निकला परिवार।
इसी बीच बहुत से लोग
जमा हो गए।
आनन फानन में पुलिस
और सेना इत्तला हो गए।

अब मैं खुश था कि सेना
पल भर में इनको भगा देगी।
पर पशुप्रेमी मंत्री ने चेताया कि
चली गोली तो केस लगा देगी।
मजबूरन बन्दूक फेंक
सेनावाले ढेला चलाने लगे।
भागे नहीं साँप, जहर फेंकने को
अपना फन फैलाने लगे।

बोले कुछ पड़ोसी भाई

इनको क्यों भगा रहे हो।

छोटी सी बात का यूँ

बतंगड़ क्यों बना रहे हो।

चंद घण्टे में ही बात, वन की

ज्वाला सी फैलने लगी।

तेजी से चलने वाले दस

चैनलों में खबर चलने लगी।

कहने लगे मीडिया वाले,

जहर नहीं, साँप भी देखो।

बिंदी वाली संगठन बोली,

मानवाधिकार तो सीखो।

इतने में एक सिपाही ने

पैलेट गन चला दिया।

मारा गया था अभी एक ही साँप

घटना ने पूरा संसद हिला दिया।

एक विपक्षी नेता ने संसद में

साँपो की व्यथाकथा सुनाई।-

थोड़े दिनों पश्चात् ही सर्वोच्च

न्यायालय ने भी सहमति जताई।

मैं बेबस, असहाय यूँ ही

घर के बाहर खड़ा रहा।

और मेरे स्वर्ग से आशियाने में

साँप कुण्डली जमाये पड़ा रहा।

इतने में जो मेरा पड़ोसी मेरे

घर पर नजरें जमाये बैठा था।

आ गया साँपों से मिलने, हाथों में

मेढ़क और दूध का कटोरा था।

झाँसा मिला मुझे, अब मेरा घर

उसी पड़ोसी के कब्जे में था।

नेताओं ने दी उसे ही शाबाशी,

मैं निरीह तो बस सदमे में था।

हताशनिराश पछताता मैं-

अनवरत दिनरात रोता।-

न देखने पड़ते ये दिन, ग़र सांपों को

खुद लाठी से कुचला होता।।

"अनंतमहेन्द्र "

<u>अनीता गुप्ता</u>



अनीता गुप्ता

शिक्षा - एम. कॉम. सी.ए.

व्यवसाय(बाफना एंड कम्पनी.ए) पार्टनर-, लेखिका

शब्द

क्या शब्दों का भी मन होता है ?
क्या वे कभी खीस निकालते हैं
हिन्दी,उर्दू,फ़ारसी,अंग्रेज़ी ,
गोरे,काले,साँवले शब्द ,
क्या वे दोषारोपण भी कर लेते हैं ?
तो फिर युद्धोन्मत भी होते होंगे ।
क्या तुमने शब्दों को निज धर्म की ऋचाएँ पढ़ते सुना है ?
क्या पुल्लिंग अधिक बलशाली होते हैं ?
स्त्रीलिंग का बलात्कार कर लेते हैं ??
क्या,वे तो गूँगे! अन्धे होते हैं-बहरे-
मैनें तो सुना था वे मानवों से अधिक जीवंत होते हैं ।।
किताबों की धरती से,
पन्नों के मोहल्लों से ।
पंक्तियों के गलियारों से बाहर निकल,
रोज रात के अँधियारे में,
शब्द उद्वेलित होकर पूछते हैं ।
उनके माने क्यों बदल रहे हैं ।।
क्या व बूढ़े हो चले हैं ?
क्या वे मरने वाले हैं।
उनकी सहिष्णुता को क्यों ललकारा जा रहा है ।
क्या वे शरणार्थी हैं मानव के ,

या फिर मानव उनका ।।

अब किस देश का रुख़ करें ,

कौनसी सीमा उनकी अपनी है ।

कौनसी नदी पर उनका वर्चस्व है ,

भोर की पहली किरण तक शब्द रोते हैं ।।

क्या कोई उनके अज़ाब को समझेगा ?

फिर लौट जाते हैं अनमने से ,

जिल्द की सरहदों में ।

बदहवास बेजान बेज़ुबान ।

दरस

लाया था दो उडहुल तोड़ के

नहीं कनक रुपक अपार

कब से खड़ा हूँ दरस को

मैं विपन्न नहीं जानता व्यापार

तुम ही आ जाओ प्रभु बाहर

दूर तपती धूप में वामांगिनि

शिलाओं पर चलाती कुठार

अर्धनग्न बालक बिलखते

जठर में पावक का अंगार

तुम ही आ जाओ प्रभु बाहर

नहीं जानता यागयज्ञ-

नहीं भूदेवसिद्धी आचार-मंत्र-

कौन जाति गोत्र वर्ण मेरा

मैं तो भूमिपुत्र निराधार
तुम ही आ जाओ प्रभु बाहर

अनिल शुक्ल



Name- Anil Shukla.
Father name- Keshri Narayan Shukla.

Address-
Vill- Kharhargarhi,
Post- Baherequinya,
District-Balrampur (U.P.)-271201.

DOB-10/08/1990

Mo.-09415601021.
-09990050646

भला कैसे भुला दूं मैं मोहब्बत का जमाना वो ।
हंसाना वो, रूलाना वो, खफा होना, मनाना वो ।।

वो पीछे से तेरा आकर लिपटना मुझसे चुपके से ।
मेरी गोदी मे सर रख करके हालेदिल सुनाना वो ।।-

सिंदूरी शाम मे संगसंग टहलना वो बगीचों में।-
शरारत से तितलियों को पकड़ना और उड़ाना वो ।।

झुकी नजरों से मुझसे प्यार की बातें सभी करना।
हया से फिर दुपट्टे को अंगुलियों मे फंसाना वो।।

वो चोरी से तेरा घर से निकलना मुझसे मिलने को ।
विदा लेते हुए हंसहंस के अश्कों को छुपाना वो।। -

-अनिल शुक्ल

सभी रस्मो रिवाजों को हमेशा तोड़ चलते हैं ।
किसी लायक नहीं होते वही दुनिया बदलते हैं ।।

महकता है गुलों से ही भले सारा जहां लेकिन ।
तभी गंगा निकलती है कि जब पत्थर पिघलते हैं ।।

हुनर आता नहीं है फक़त शमा को उजाले का।
उजाला तब भी होता है किसी के घर जो जलते हैं ।।

नहीं देखा किसी ने कल जो कुछ है आज ही है वो ।
भरोसे कल के जो रहते हैं वो ही हाथ मलते हैं ।।

फक़त मजबूत होना ही नहीं अच्छा जमाने में।
जिन्हे आता पिघल जाना वही सांचे मे ढलते हैं ।।

हमेशा तैरती रहती है रोटी उनकी आंखों मे ।
कि बच्चे मुफलिसों के कब खिलौने को मचलते हैं ।

जरूरी है बड़ा हर राह मे पत्थर पड़ा होना।
हमारे जैसे रहबर खाके ठोकर ही सम्हलते हैं ।।

भले ही कितनी सुन्दर हो सड़क ये हमसे क्या मतलब।
हमारे बच्चे साहब इन्ही फुटपाथों से पलते हैं ।।

जलन दिल मे, सांस ठण्डी और बरसात आंखों मे ।
जनम लेता है इक आशिक जो मौसम साथ मिलते हैं ।।

अनुपम चितकारा



२६ अप्रैल १९८५ को इनका जन्म दिल्ली के मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ। परिवार में आध्यात्मिकवाता वरण होने के कारण से बचपन से इनका जुड़ाव आध्यमिकता की तरफ बढ़ गया । आध्यात्मिकऔर सूफी

विचारधारा के लेखकों को पढ़ना इनकी प्रमुख रूचि है। स्कूली शिक्षा पूरी करने के बादस्नातक के साथ फ्रेंच भाषा और ज्योतिष का अध्ययन भी किया है । लेखन में इनकी रूचि स्कूल केसमय से ही है और उसमे इन्होने कई पुरस्कार भी प्राप्त करे थे । स्नातक की शिक्षा के बाद अभीअंग्रेजी में परास्नातक की शिक्षा ले चुकी है। काफी समय से यह ज्योतिष से जुडी वेबसाइट के लिएलेखन का कार्य कर रही है और ज्योतिष से जुड़े कई लेख पत्रिकाओं में छप चुके हैं । इससे पहले इनकीकविताएँ हिन्द युग्म प्रकाशन द्वारा तुहिन(२०१५) और सौ कदम (२०१६) में प्रकाशित हो चुकीं है ।

पुरानी डायरी

पुरानी डायरी के पन्नों पर,
कुछ जज़्बात समेटे थे मैंने,
वक़्त की धुल को हटा कर,
देखा तो वह आज भी है हरे भरे
लफ़्ज़ों में जी भर कर पिरोये थे,
कुछ लम्हें, कुछ हसरतें,
कुछ उम्मीदें और कुछ ख़्वाब,
कुछ सीधे सादे से और कुछ सरफिरे
ज़िन्दगी जीने की जल्दबाज़ी में,
ज़रूरतों का सामान जुटाने में,
कुछ बिसरे, कुछ बिछड़ते गए,
और कुछ रह गए बस अधूरे
आज फिरसे पलटा है,
उन्हीं पन्नों को एकबार,
जीने को वही सारे ख़्वाब,
आज भी जो हैं गुज़रे कल से खरे

हौसला

माना मैं नहीं हूँ बड़ा,

फिर भी किया है ये फैसला,

हौसले के पंख बना,

उड़ना है मुझे उस दिशा,

छूना है वो आसमान,

बना है जो मेरे लिए

आँखों में आँखे डालके,

रार हर उलझन से ठानके,

अपने गगन की तलाश में,

उम्मीदों की परवाज़ में,

छूना है वो आसमान,

बना है जो मेरे लिए

आरिफ शहडोली



कवि परिचय – आरिफ शहडोली एक जाना पहचाना नाम है। अभिनय के क्षेत्र में रंगकर्म से अपने कैरियर की शुरुआत करने वाले आरिफ मणिरत्नम जैसे फिल्मकारों के साथ काम कर चुके हैं। भारतेंदु नाट्य अकादेमी लखनऊ और भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान पुणे से अभिनय का प्रशिक्षण लेने वाले आरिफ लेखन के क्षेत्र में काफी लम्बे समय से सक्रिय हैं। लखनऊ के साक्षरता निकेतन से सरल लेखन

का प्रशिक्षण हासिल कर लंबे समय तक नव साक्षर साहित्य के लेखन में भी सक्रिय रहे। इस समय टेलीविजन धारावाहिक चिड़ियाघर समेत कई सीरियल्स में लगातार दिखाई दे रहे है।

1-
प्रजा तंत्र में प्रजा की भलाई देखिये ।
प्रजा भूखी उनके घर मलाई देखिये ।
गंजे हैं इनके नाखून भी बढ़े ,
इनके लिए खुदा की खुदाई देखिये ।
राजनीति का रंग सफ़ेद जहर हो गया ,
अपने खिलाफ खड़ा अपना भाई देखिये ।
आरिफ़ कहे देखना है तो देखिये ,
इनके अतीत की गहराई देखिये ।
2
पीने का पानी नहीं मिलता फव्वारा चौराहे पर ।
भय के मारे डरें निगाहें इतवारा चौराहे पर । ।
भूंखे पिता के भूंखे बच्चे भूंखे ही सो जाते हैं ,
गाँव भी दूध बेंच देते हैं नित सारा चौराहे पर ।
सारे देश की इनकी चिंता फिर भी गुमनाम रहे आरिफ़ ,
सबको सब सुख दे घूमे बन बंजारा चौराहे पर ।
3
जिंदगी अजीब संघर्ष खेल बन गई ।
बिन पहिये की टूटी रेल बन गई । ।
सच्चाई पैसेंजर की तरह रही ,
छल कपट आपसी बुराई मेल बन गई ।
समस्याएँ बढ़ी दिन दूनी बढ़ रहीं ,
यहाँ समस्याओं की कई जेल बन गई ।
अंग्रेज़ी भारत में आरिफ़
हिन्दी के आगे अमरबेल बन गई । ।
4
जीत और हार का खेल है चुनाव ।
चौसठ कलाओं का मेल है चुनाव ।
जनता का हाल बेहाल ही रहा ,

जनता कोल्हू और बैल है चुनाव ।
जीतने के लिए किसी भी हद तक गिरा दे ,
सिर चढ़ी हुई चुड़ैल है चुनाव ।
लोक तंत्र से लोक गायब हो गया ,
दिखने में मीठा कड़वा तेल है चुनाव ।

अरविन्द श्रीवास्तव



अरविन्द श्रीवास्तव
राज्य सचिव एवं मीडिया प्रभारी बिहार प्रलेस -
मोबाइल -9431080862.
https://www.facebook.com/arvindsrivastavaa

अभी-अभी

-अरविन्द श्रीवास्तव

अभी-अभी गाज़ा पर हुई है बमबारी
अभी-अभी मोसुल पर ड्रोन हमला
खून से लथपथ है यह धरा और
अभी-अभी एनीमिया से पीड़ित माँ ने

तोड़ा है दम अस्पताल में !

एक युवक सोंच रहा है अभी-अभी
धरती और धरती के बाशिन्दों के लिए
यह समय बेहद खराब है

अभी-अभी सामने वाली छत से
एक स्त्री छलांग लगा कर
कूदना चाहती है

पड़ोस में बिलखता हुआ एक बूढ़ा
अभी-अभी भगवान से
खुद को उठा लेने की प्रार्थना कर रहा है

अभी-अभी एक लड़की अगवा हुई है
एक लड़का
अभी-अभी ट्रक से
कुचला गया है

अभी-अभी एक चिड़िया
खदेड़ी गई है वेंटिलेशन से
एक कुत्ता घर बदर हुआ
गैराज से
बुदबुदा रही है संवेदनाएं
'नहीं रह गयी यह दुनिया
अब रहने के काबिल'

ठीक ऐसे ही समय में
एक बच्चा अभी-अभी
गर्भाशय के तमाम बंधनों को तोड़ते हुए
पुरजोर ताकत से
आना चाहता है
पृथ्वी पर !
**

सम्मान में

सबसे पहले
शाही घराने के उस लाडले का सम्मान
जिसने शेष जीवन
कामगारों के साथ बिताने का कर लिया निश्चय

उन तानाशाहों का भी सम्मान
समय रहते जो चेत गये
और मान लिया कि उनके दिन
गिने-चुने हैं धरती पर

सम्मान नृपतंत्र के उन लाडलियों का
जिसने मेहनतकशों के साथ-साथ
पसीना बहाने का कर लिया संकल्प

उन बेगम-बांदी-रखैलों का भी सम्मान
जिसने हक-हकूक के लिए अंतत:
कर दिया प्रबंध
सुल्तानों की खलड़ियाँ उघेरने का

और चलते-चलते
उन हरामखोर दलालों का भी सम्मान
जिन्होंने मुगालते में रखा
हरवक्त हुक्मरानों को !

असद निज़ामी



असद निज़ामी

असद निजामी
संस्थापक प्रतिभा मंच -
शिक्षा -M.A. (उर्दू (
पीएचडी (मानद)
मगहर ,संत कबीर नगर , यू . पी.

मो .– 9793409397

आज गुमनाम हूँ कल नाम भी बढ़ सकता है
आप चाहें तो मेरा दाम भी बढ़ सकता है

रात के पिछले पहर नींद भी आ सकती है
दर्द का क्या है सरे शाम भी बढ़ सकता है

आप इक बार मेरे घर में चले आएं अगर
हुस्न ए दीवार ओ दर ओ बाम भी बढ़ सकता है

वक़्त कब किसका बदल जाए खबर है किसको
आज बेकार हूँ कल काम भी बढ़ सकता है

बद गुमानी लिए इक दोस्त ख़फ़ा हो बैठा
मुझको मालूम है इलज़ाम भी बढ़ सकता है

उनकी हर बात पे तारीफ़ ही करते रहिये
महफ़िल ए नाज़ में इकराम भी बढ़ सकता है

तोहमत ए बुख्ल लगाओ न कभी साक़ी पर
प्यास पैदा तो करो जाम भी बढ़ सकता है

हम ग़ज़ल गोई में क्यों नाम नहीं कर सकते
जब रुबाई से ही ख़य्याम भी बढ़ सकता है

बस इसी वास्ते इस बारे में सोचा ही नहीं

इश्क़ करने से कई काम भी बढ़ सकता है

आप हैरान परेशान भी हो सकते हैं
ये भी मुमकिन है कि आराम भी बढ़ सकता है

बे ज़मीरी कई अलक़ाब तुम्हे दे देगी
सर झुकाओगे तो इनआम भी बढ़ सकता है

असद निज़ामी

झूट के शह्र में सच्चाई का हामी होना
लोग आसान समझते हैं "निज़ामी" होना

शक्ल ओ सूरत में खराबी हो कोई बात नहीं
कैसे मंज़ूर हो किरदार में खामी होना

जितने गुमनाम हैं सब लोग यही कहते हैं
यार अच्छा भी नहीं आदमी नामी होना

लोग परदेस में जाकर ये समझ पाते हैं
खुश नसीबी है मेरे यार मक़ामी होना

कौन दुनिया को भला छोड़ के जाना चाहे
आरज़ी लोगों की चाहत है दवामी होना

मशवरा है ये नए सारे कलमकारों को
ख़ास लहजा रहे शायर भी अवामी होना

सिर्फ कुछ साल हुए मुझको ग़ज़ल कहते हुए
मुझको तस्लीम है अशआर में खामी होना

असद निज़ामी

अशोक दर्द



मूल नाम : अशोक कुमार ठाकुर

माता : श्रीमती रोशनी

पिता : श्री भगत राम

जन्मतिथि- : 23 अप्रैल 1966

जन्म: स्थान- गाँव घट्टशेरपुर .डा (टप्पर) , तहसील डलहौज़ी, जिला चम्बा (.प्र.हि)

परिवार —

माता : श्रीमती रोशनी

पिता : श्री भगत राम

पत्नी : श्रीमती आशा

संतान —

पुत्री : डाशबनम ठाकुर ., **पुत्र :** इंजिशुभम ठाकुर .

शिक्षा : शास्त्री, प्रभाकर, जे बी टी, एम ए बी एड (हिंदी)

भाषा ज्ञान : हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत

व्यवसाय : राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में हिंदी अध्यापक

लेखन की विधाएँ : कविता, कहानी व लघुकथा

प्रकाशित कृतियाँ : अंजुरी भर शब्द (कविता संग्रह); लगभग बीस काव्य संकलनों में कविता लेखन |

सम्पादन : मेरे पहाड़ में कविता]संग्रह की पत्रिका बुरांस में सम्पादन सहयोग विद्यालय [|

प्रसारण : दूरदर्शन व आकाशवाणी शिमला तथा धर्मशाला से रचना प्रसारण |

सम्मान : हिमाचल प्रदेश राज्य पत्रकार महासंघ द्वारा आयोजित अखिल भारतीय कविता प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने के लिए पुरस्कृत, हिमाचल प्रदेश सिमौर कला संगम द्वारा लोक साहित्य के लिए आचार्य विशिष्ट पुरस्कार 2014, सामाजिक आक्रोश द्वारा आयोजित लघुकथा प्रतियोगिता में 'देशभक्ति' लघुकथा को द्वितीय पुरस्कार| इनके आलावा कई साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित |

अन्य : इरावती साहित्य एवं कला मंच, बनीखेत का अध्यक्ष मंच के द्वारा कई अन्तर्राज्यीय) सम्मेलनों का आयोजन(|

वर्तमान पता : अशोक दर्द, प्रवास कुटीर, गाँव व डाकघर बनीखेत, तह. डलहौज़ी,जि. चम्बा (हि॰प्र॰)

स्थायी पता : गाँव घट्ट, डाकघर बनीखेत, जिला चंबा (हिमाचल प्रदेश)

मोबाइल : 09418248262

ई मेल : ashokdard23@gmail.com

खत्म सा हो गया

मिलजुल के चलना गाँव में खत्म सा हो गया |
मुहब्बत का पलना गाँव में खत्म सा हो गया ||

हर घर रसोई गैस के सिलेंडर पहुँच गये |
चूल्हों का जलना गाँव में खत्म सा हो गया ||

पैसे की अंधी दौड़ ने यूँ गाँव खा लिए |
मिलजुल के हंसना गाँव में खत्म सा हो गया ||

जहरीली हवा शहर की गाँव में घुस गई |
अब इससे बचना गाँव में खत्म सा हो गया ||

लोकगीत ढल गये फ़िल्मी संगीत में |
नया गीत रचना गाँव में खत्म सा हो गया ||

मतलब की हवा खा गई इसकी तहजीब को |
दीयों का जलना गाँव में खत्म सा हो गया ||

पतझड़ के मौसमों ने आज गाँव ढक लिया |
गुलों का खिलना गाँव में खत्म सा हो गया ||

हैं आंगनों की ओट में छुपे बहेलिये |
पंछियों का उड़ना गाँव में खत्म सा हो गया ||

भरमा दिया है शहर ने युवा को इस तरह |
पढ़ लिख के बसना गाँव में खत्म सा हो गया ||

है आदमी से आदमी डरा – डरा हुआ |
रातों को चलना गाँव में खत्म सा हो गया ||

सामान होना चाहिए ...[कविता]

खाने पीने जीने का सामान होना चाहिए |
कच्चा पक्का जैसा भी मकान होना चाहिए ||

लगा के घात बैठे हुए शत्रु से बचाव को |
अपने पास तीर और कमान होना चाहिए ||

रूढ़ियों को भूल कर बेकार बातें जानकर |
सब को अपनी बेटी पे गुमान होना चाहिए ||

तभी तो लिख पाओगे जोश भरे गीत तुम |
अपने पास दर्दे दिल जवान होना चाहिए ||

महसूसने को बचपने की प्यारी सी शरारतें |
टैगोर का वो काबुली पठान होना चाहिए ||

क्रांतियों की आग को हवाएं देने के लिए |
युवा में सरपरस्ती का तूफ़ान होना चाहिए ||

पंछियों के परों को उड़ान की आशीष दो |
प्रेम से भरा-भरा जहान होना चाहिए ||

नील गायें चर न जाएँ हल्कू के खेत को |
बीचों बीच खेत के मचान होना चाहिए ||

तोड़कर दीवारें दर्द धर्म जाति भाषा की |
बंद वैर नफरतों का गान होना चाहिए ||

<u>बसंत कुमार शर्मा</u>



जन्म तिथि: 05/03/1966 जन्म स्थान - धौलपुर (राजस्थान), माता- पिता का नाम- श्रीमती कमला शर्मा एवं श्री दौलतराम शर्मा, शिक्षा - M. Com, भारतीय रेल यातायात सेवा (IRTS), पश्चिम मध्य रेलवे पर जबलपुर में उप मुख्य परिचालन प्रबंधक के पद पर कार्यरत
छंद में मुक्तक, दोहे, गीतिका /ग़ज़ल लेखन

(१)

हैं बिखरती कहाँ यूँ कभी रश्मियाँ
तेल में डूबकर जल रहीं बातियाँ
आप हम सोचते ही रहे कुछ करें
रोशनी के लिए जल गयीं तीलियाँ

(२) दवा नहीं है दर्द-ए-दिल की, यूँ जग में उपचार बहुत हैं
खुला हुआ कोई न मिलेगा, शहर गाँव घर-द्वार बहुत हैं
खुश रहना हो हर हालत में, गम से फिर घबराना कैसा
फूल हमेशा खुश रहते है, भले बाग़ में खार बहुत हैं

(३)
नाम होठों पर तुम्हारा, रात दिन संसार में
देर इतनी कर रहे क्यों, प्यार के इजहार में
घूंघटा जो बीच में है, अब हटा भी दो इसे
बात खुल कर के करो तुम, लाज कैसी प्यार में

(४)
मात्र अपनों से लगन तो क्या हुआ

छू लिया तुमने गगन तो क्या हुआ

दे सको खुशियाँ किसी को, बात है

हो गए खुद में मगन तो क्या हुआ

(५) माँ
पाप अपने कुछ मिटाने चल दिए
लोग गंगा में नहाने चल दिए
तीर्थ घर में है हमारे सोचकर
पैर माँ के हम दबाने चल दिए
(६)
पड़ी थी धूल खिड़की पर, कहो तुमने हटाई क्यूँ
अकेले थे, बड़े खुश थे, नयी आशा जगाई क्यूँ
झलक तुमने दिखाई क्यूँ, अगर चेहरा छुपाना था
जुबां खामोश रखनी थी, नजर हमसे मिलाई क्यूँ

छगन लाल गर्ग



पिता का नाम जीरावल -श्री विष्णु राम जी गर्ग ।निवासी-,तहसील रेवदर-,जिला राजस्थान) सिरोही-विधालय राजस्थान विश्व(हिन्दी)परास्नातक -शिक्षा(, जयपुर ।राजकीय सेवा राजकीय माध्यमिक - - विद्यालय मे अध्यापक1978 से 1990प्राध्यापक स्कूल शिक्षा -1991 से 2008 प्राचार्य   -2009 से 2014 सेवानिवृत -30 / 4 /2014प्रकाशित पुस्तके क्षण बोध-, काव्य संग्रह । गाथा ओन लाइन पब्लिकेशन, लखनऊ ध मनमदां(उ प्र), काव्य संग्रह । उत्कर्ष प्रकाशन, मेरठ रंजन रस(उ प्र), काव्य

संग्रह ।उत्कर्ष प्रकाशन, मेरठ -वर्तमान पता(उ प्र)2 डी 78 राजस्थान हाऊसींग बोर्ड, आकराभट्टा, आबूरोड ।राजस्थान ।E mail adr. chhaganlaljeerawal@gmail.com , Mob.No. 9461449620

अज्ञेय अंगूरी आल्हाद नवल मदहोशी भरा

अन्वेषण अंतरतम चाह तन मृदुल जोश भरा

वयसंधि काल आगे अदृश्य राह संकोच घना

अवयव रोमांसित स्व सिमटन तन पल ठहरा ।

आशक्त स्वयं संतुलित देह नवनीत विकसित सुन्दर

आत्ममुग्ध सी नैन मुंद करूं स्व आत्ममंथन निरंतर

परिवर्तन मोह फसी करती देह दीदार श्रृंगार नित्य

नर नेह स्वप्न पाल बढती अज्ञात राह चंचल संसार।

सतरंगी स्वप्निल सहचर प्रगाढ प्रेम पुंज पुरूष चाह

नवरंग अलंकरण करे श्रृंगार बदन शोभित रहे उछाह

पवन गति विचरण करूं प्रियतम तन मे बिखर सुगंध

नवरस संचरण तन विरल बन बहे समतल सुख चाह ।

नयन कोष मे इठलाते शैशव तज यौवन सपने

शयन काल मे रोमांसित करें प्रिय मिलन सपने

गुम गुम जाती मृगी बन तृष्णा भरे रंगीले सागर

भूल भूलैया विपिन राहे खोजूँ प्रिय मिले अपने ।

सौरभ सौंदर्य रस घुलने लगी नादान जवानी

लावण्य तन केसर रंगने लगा अपनी मनमानी

आभामंडल प्रिय कल्पित नेह से रह रह सताये

लज्जा सुन्दरी तन मन हुई मोम सी आगवानी ।।

छगन लाल गर्ग

क्या कहें मेरे भावी भाग्य

नियति तुम्हारी

कर चुके निर्धारित हम

जीयो तुम रेंगते कुचले

अच्छा रहेगा हमारे लिए

बनते हैं रास्ते तुम्हारे कारण

हमारी असीम कल्पनाओं के

रौदने की शर्त पर तुम्हें

हो सके इस्तेमाल तुम्हारा

पूर्जों की तरह

ओर कभी रहस्यमय ओट भरी

देश भक्ति की लाइन मे

भ्रष्टाचार मुक्त देश मे

तुम ही बनो नीव की ईट

विकसित अनंत

ओर इसी आधार चलते रहे

पनपते रहे

कारखाने हमारे तरक्की के

जितने विवश लाचार तुम

उतने ही होते आबाद हम

अच्छी जिंदगी तुम्हारी हमारी बर्बादी

तुम्हारे नरक प्रगति होती रहे

प्रयत्न शील भरपूर प्रबलता से

समस्त आसूरी शक्तियां

असंख्य रूप लेकर

कैसे कहूँ मजबूर हूँ नाम नही ले सकूँगा

नही सामर्थ्य मुझमे तुम सा ।

<u>दीपशिखा झा</u>



अटरिया उरई

वो बारिश की बूंदे,
वो मिट्टी की खुशबू।
वो भींगा सा आँचल,
वो बारिश की मस्ती।

वो बारिश की बूंदे
वो लहराती हवायें।
वो झुकती सी आँखे,
वो बारिश की मस्ती।

वो बारिश की बूंदे,
वो फूलों की खुशबू।
वो कोयल की बोली,
वो बारिश की मस्ती।

वो बारिश की बूंदे,
वो सावन के झूले।
वो बसन्तों की पतझड़,
वो बारिश की मस्ती।

वो बारिश की बूंदे,
वो चाय की प्याली।
वो कागज की नावें,
वो बारिश की मस्ती।

-दीपशिखा झा

धर्मा नन्द लखेड़ा



ग्राम (उत्तराखण्ड) देहरा दून-सत्यनारायण टेम्पल जिला-.खेरीखुर्द पो-पिन-249204 E-mail-lalheradn51@gmail.com शिक्षा स्नातक-IDPL ऋषिकेश से सेवा निवर्त सदस्यभारतीय जन नाट्य -) संघIPTA) मेरे आदर्शराहुल सांकृत्यायन हिमालय की पदय-

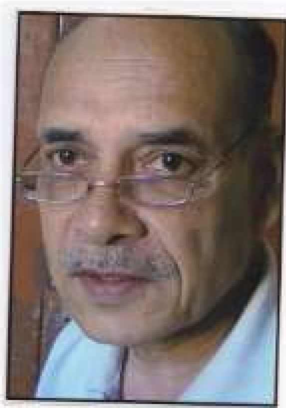
"औरत"
मैं एक माँ हूँ।
एक सच्ची जीवन साथी
नंगे पांव तपते रेगिस्तान में भटकती
थके हारे मछुआरे पति द्वारा
लाई मछलियों का टोकरा ले
हॉट बाजार में बेचने निकलती।
एक अदद गाय के लिए,मैदानों में,
मीलों दुर्गम पहाड़ी रास्तों में,
चारा तलास् ती।
भोर से लेकर सांझ तक
खेतों में खटती,
खेत में बच्चे को जन्म देती।
बाघ द्वारा खाई बकरी के लिए.
आंसू बहा ती।
"इलाहाबाद के पथ पर"
"निरालाकी"
वह तोड़ती पत्थर।
मैं नहीं जानती सौंदर्य प्रतियोगिता
क्या है।
पवन संवारे केश,सूर्य से मिलती
आभा
शीतलू के थपेड़े-
,वर्षा की बूँदें ही
सौंदर्य प्र साधन हैं मेरे।
"अति"नारीवाद-
नारी मुक्ति अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

जैसे शब्दों का मेरे लिए कोई अर्थ नहीं।
श्रम ही मेरे जीवन का सम्बल है,
और मैं एक औरत हूँ।

"आजादी अभिव्यक्ति की"
कहने को लोकतन्त्र है,
अभिव्यक्ति की आज़ादी भी
पर ऐसा है नहीं।
कारपोरेट और बाजार बड़ा है
लोकतन्त्र से जनता के
हितों से ऊपर है बाजार का हित।
वे चाहते हैं लूट का तन्त्र
चलता रहे अखंड,
यूँ ही बना रहे धर्म के नाम पर पाखण्ड,
पाखण्ड,अश्लीलता,
संस्कृतिक प्रदूषण का करेंगे पोषण -
पूजाअर्चना-,कला,लोलशिकार गायन को बनाया-
अपसंस्कृति ने फिल्मों,टी वी,मिडिया और
विज्ञापनों मे गीतों,नाटकों,कहा नियों में प परोसते हो
अनैतिकता और भोंडापन।
तुम्हारा तन्त्र कितना कमजोर है?
प्रगतिशील गीतोंनाटकों लेखों से तुम्हें खतरा लगने लगा है-
तभी तो तुमने किया है
हमला, पेरुमल मुरुगन केपर हमला"मधोस भागन"
गिरीश कर्नाड केपर हमला"नाग मण्डल"
आई आई टी चेन्नै के स्टडी सर्कल पर हमला
बाँचा इलैया के लेखन पर।
हमला हैदराबाद,बनारस,इलाहा बाद, अलीगढ़ और
जे एन यू पर, और 'कन्हैयापर।"
तुमने की है हत्या रोहित वेमुला,दाभोलकर,पनसारे
और कुलबर्गी की।

तुम्हें नहीं पता और भी मजबूत हुई है
धार इनके विचारों की क्यों की विचार कभी मरता नहीं।
पसार रही पांव तुम्हारी ही देखरेख में
धर्मान्धता,असहिष्णुता,निष्ठुरता और
अल्प संख्यक बहू संख्यक कट्टरता।
तुमने किया है तस्लीमा का निर्वासन
नूरजहिर की किताबों पर और पर हमला "इप्टा"
क्योंकि तुम्हारी नज़र में अभिव्यक्ति और लोकतन्त्र से
बड़ा है बाज़ार।
अब नई पीढ़ी पै निर्भर है, वही निर्णय करे!
तुम्हें चाहिए या आज़ादी अभिव्यक्ति की। "फासिज़्म"

<u>दिनेश बैस</u>



रेल सेवा से निवृत्त- 2015
रेल सेवा में रहते लेखन सम्बंधी अनेक पुरस्कार/ सम्मान अर्जित
रेल मज़दूर आन्दोलन में सक्रिय भूमिका
'रेल ज़गत' पाक्षिक पत्र के संस्थापक सम्पादक
'दैनिक जागरण' झाँसी के लिये गत् इकतीस वर्षों से दैनिक तथा साप्ताहिक व्यंग्य लेखन. अन्य अनेक स्तम्भ लेखन
'प्राची मासिक,' जबलपुर के लिये व्यंग्य स्तम्भ लेखन

लगभग सभी विधाओं में लेखन तथा प्रतिष्ठित प्रतिष्ठानों से प्रकाशन/प्रसारण
मुख्य विधा व्यंग्य
एक द्वय कवि कविता-संग्रह पी पी एच से प्रकाशित
हाल ही में डायमंड प्रकाशन के प्रस्तावित व्यंग्-संग्रह के लिये दो व्यंग्य स्वीकृत
मध्य प्रदेश समाज कल्याण तथा पंचायत संचालनालय द्वारा एक पांडुलिपि स्वीकृत
सीटू, उत्तर प्रदेश व्दारा, मज़दूरी सम्बंधी एक पुस्तिका का प्रकाशन
जनवादी लेखक संघ, झाँसी में लगभग दस वर्ष सचिव का दायित्व सम्हाला
जलेस की राज्य तथा केन्द्रीय कार्यकारिणी में प्रतिनिधित्व
अब, प्रगति शील लेखक संघ तथा इप्टा में, सक्रियः. फिलहाल अध्यक्ष
अनेक समाजिक संगठनों में सहयोगी भूमिका
समप्रतिः स्वतंत्र लेखन
सम्पर्कः 3-गुरूव्दारा, नगरा, झाँसी-284003, मो. 0800 427 1503
email: dineshbais3@rediffmail.com

चाँद बहुत कमज़ोर लग रहा

हर रस्ता गुमनाम है शायद,
हर मंज़िल अनजान है शायद.

सबकी कीमत कुछ न कुछ है,
बिकने को इंसान है शायद.

बस्ती में अब शोर नहीं है,
जंगल बीयावान है शायद.

हर बंदा ऐसे मिलता है,
करता वो अहसान हो शायद.

आज मिले तो वो यूं बोले,
मिले हैं हम पहले भी शायद.

ग़म तब इतने बोझिल न थे,
जब हम तुम एक साथ थे शायद.

रफ्ता-रफ्ता निकल गई वो,
उम्र कहीं ठहरी न शायद.

मेरे गीत अधूरे तब तक,
तुम उनको गाओ न शायद.

चाँद बहुत कमज़ोर लग रहा,

चलते-चलते थका है शायद.

हाँ हम सैनिक हैं

हाँ
हम सैनिक हैं।
सीमाओं पर दिल से नहीं
दिमाग से लड़ते हैं।
दिल से लड़ें तो
विस्फोट सम्भव है
कि आमने -सामने खड़े हम
दुश्मन नहींए दोस्त भी हो सकते हैं।
यह विस्फोट होते ही
मिट सकती है खून की प्यास
छंट सकती है धुंध अविश्वास की।
गाली ओर गोली की भाषा की जगह
तड़फ उठ सकती हैए गले लगने की।
हम समझ जायें कि हम भी श्रम बेच कर
रोटी कमाने वाले मजदूर ही हैं।
बस हमारा उत्पाद होता है किसी अजाने
की हत्या।
तो
उदय हो सकता है सूर्य शांति का।
क्योंकि
जब हम लड़ेंगे ही नहीं तो युद्ध कैसे होगा

लेकिन यह स्थिति हो सकती है।
उनके लिये आत्महत्या के अनुकूल।
जो विश्व के संसाधनों को बपौती मानते हैं।
दूसरों के धन-धरती-दौलत
लूट लेने की जुगत ही है जिनका लक्ष्य।
यह लक्ष्य प्राप्त करने के लिये वे चाहते हैं
युद्ध चलते रहें।
इसके लिये वे तैयार करते रहते हैं ऐसी नस्ल
जिसके पास बेशकए थोड़ा बहुत दिमाग हो
मगर दिल हर्गिज न हो।
हाथों में रोटी और कलम की जगह हों बंदूकें
कभी धर्म के नाम पर कभी जाति के नाम पर
कभी देश के नाम पर कभी राष्ट्र के नाम पर
लड़ते रहने के लिये।
क्योंकि मानवता के नाम पर तो बस भाईचारा ही बाँटा जा सकता है
जो उनका अभीष्ट नहीं।

ठिकाने जहाँ- जहाँ आप हमसे जुड़ सकते हैं

नई क़लम पब्लिशिंग हाउस

WWW.NAIKALAM.COM

'नई क़लम - उभरते हस्ताक्षर' - ई- पत्रिका

HTTP://NAIQALAM.BLOGSPOT.IN/

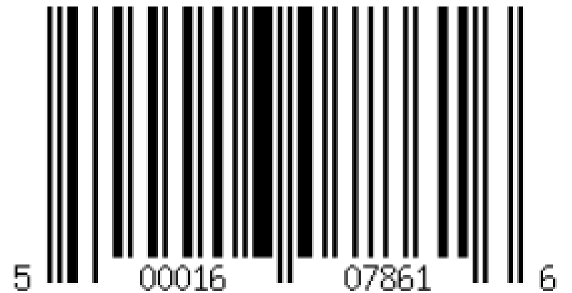
FACEBOOK OFFICIAL PAGE -

HTTPS://WWW.FACEBOOK.COM/NAIQALAM/

HTTPS://WWW.FACEBOOK.COM/NAIKALAMPUB/

EMAIL:- NAI.QALAM@GMAIL.COM





अगर आप कलमकार हैं और आप भी चाहते हैं कि आप की तरह कोई आप का भी लिखा हुआ ,पढ़ें । तो स्वागत है आपका और आपकी कलम का। जो भी सवाल हैं आपके दिमाग में बिना संकोच के हमसे शेयर कर सकते हैं।

.

Shikha Verma

(Business Development Head)

nai.qalam@gmail.com ,

shahid.ajnabi@gmail.com

+91- 8417979575



NAI KALAM PUBLISHING HOUSE

Thank you ...